।। इतना तो अवश्य याद रखें ।।

- संसार और शरीर अनित्य है । फिर भी यह दोनों नित्य शाश्वत सुख तक पहुंचने के आवश्यक साधन भी हैं ।
- ब्रह्मज्ञान से जाग्रत हो कर संसार व दिव्य परमधाम दोनों का महत्तम सुख इसी जन्म में मिल सकता हैं ।
- मानव तन और ब्रह्मज्ञान प्रकाश का यह आखिरी युग है और तुम्हें मिला अनमोल अवसर है ।
- अपने मिथ्या अहंकार या "मैं पनें" की मौत से ही पंच-भूतात्मक शरीर तथा संसार का लय होता है ।
- तारतम ज्ञान से प्रकाशित श्रेष्ठ आचरण (रहनी) युक्त जीवन जीने का समय आ गया है, ज्ञान को सिर्फ कहने और सुनने-सुनाने की 'रात्रि' समाप्त हो चुकी है ।
- पहले अपने आप को पहचानो - प्रियतम प्राणनाथ से अपनी मूल निस्बत को जानो ।
- दिव्य प्रेम की नजर से संसार और निजधाम दोनों का सुख ही सुख लूटते रहो । प्रेम की उपस्थिति में माया का आवरण टिक ही नहीं सकता ।
- इतहीं बैठे घर जागे धाम-संसार में रहते हुए अपने दिव्य स्वरुप में जाग्रत रहिये ।
- ब्रह्मज्ञान सत्गुरु स्वरुप हैं, यह नित्य आनन्द को प्राप्त कराने वाला है ।
- प्रियतम परब्रह्म से दोस्ती करने के सरल उपाय - अटूटश्रध्धा, अनन्य प्रेम भाव, कृतज्ञता भाव, विनम्रता, धैर्य और संतोष ।

।। प्रेम प्रणाम जी ।।

जीवन

एक अनमोल अवसर

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के अनमोल पुष्प

प्रथम पुष्प

प्रकाशक :
श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान
Shri Prannath Global Consciousness Mission

संपर्क सूत्र :
श्री निजानन्द आश्रम
नेशनल हाईवे नं ८ बाईपास, सयाजीपुरा, वडोदरा **390019**
Email : premseva7@yahoo.com; manulpdc@yahoo.com
Phones: 989-800-0168, 787-415-1371, 942-736-4535

श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
Phone: 9811072951

Lord Prannath Divine Center, U.S.A/ Canada
914, 2nd Street, Macon, GA-31201
Email : jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com
Phones: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079
Website: www.nijanand.org

श्री निजानन्द आश्रम, साढोली
पो. झबरेडा, जिल्ला. हरिद्वार, उत्तराखंड
Email : shrinetrapalji@gmail.com;
Website : anantshriprannath.com

मुद्रक :
दर्शन प्रिन्टर्स
५, रघुनाथ हिन्दी हाईस्कूल के सामने, मेम्को-बापुनगर रोड,
बापुनगर, अमदावाद

॥ श्री प्राणनाथ जी की महत्वपूर्ण सर्व मंगलकारी घोषणायें ॥

- **परब्रह्म तो पूरण एक हैं** - पूर्णब्रह्म परमात्मा सबका एक है।
- **सोई खुदा सोई ब्रह्म** - पूर्णब्रह्म और खुदा या सुप्रीम ट्रुथ गोड एक ही है।
- **भेष भाषा जिन रचो, रचियो मायने असल** - संसार के धर्म ग्रंथो में सिर्फ भाषाकीय भेद हैं। ये सभी एक ही परम सत्य की ओर निर्देश करते है।
- **प्रेम ब्रह्म दोऊ एक है** - प्रेम और परब्रह्म एक ही स्वरुप हैं। परब्रह्म और आत्मायें प्रेम ही की मूर्ति हैं।
- **पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोचावे मिने पलक** प्रेम खोल देवे सब द्वार - प्रेम ही एक ऐसा सक्षम साधन है, जो इस जीवन में सच्चिदानन्द प्रियतम, परमधाम और दिव्य लीला का आनन्द दे सकता है।
- **मानखे देह अखण्ड फल पाईये, सो क्यों पाईके वृथा गवाईये**- मनुष्य देह अखण्ड सुख प्राप्ति का अनमोल अवसर है। इसे वृथा मत गवाईये।
- **अन्दर नाही निर्मल, फेर-फेर नहावे बाहेर**- बाह्य शुध्धि मात्र से आध्यात्मिक यात्रा संभव नहीं है। प्रियतम मिलन के लिए हृदय की निर्मलता परम आवश्यक है।
- **सब साथ करुं मै आप सा, तो मैं जागी परमान** - जाग्रत आत्मा वही है, जो अपने संपर्क में आने वाले सभी को अपने समान अध्यात्मिक सुख संपदा उपलब्ध करवा दे।
- **सुख शीतल करुं संसार**- तारतम ज्ञान से मानव मात्र के गुण, अंत:करण और इन्द्रियों के मायावी विकारों के शमन से ही संसार में सुख और शीतलता स्थापित होगी।

प्राणनाथ ब्रह्मवाणी परिचय

अनन्त सृष्टियों के अस्तित्व के जो मूल आधार है, सभी आत्माओं के जो एक मालिक है, सर्व शक्तियों के जो मूल स्त्रोत है, ऐसे प्रियतम परमात्मा ही प्राणनाथ है। हां जी, हम सभी उस सागर स्वरुप सच्चिदानन्द प्रियतम की आनंद की लहरें हैं, आत्मायें हैं। आध्यात्मिक मार्ग में इस प्रकार का परस्पर आत्मीयता का भाव केन्द्रीय है। सम्पूर्ण मानव जाति को एक आत्म-भाव से, दिव्य प्रेम की तार से जोडना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है।

साथियों ! संसारी खेल में प्रियतम प्राणनाथ हमें सत्य और असत्य की पहचान करा कर संसार को एक सूत्र करने हेतु ब्रह्मज्ञान लेकर पधारे हैं। इसे तारतम वाणी भी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह दिव्य ज्ञान, मोह माया के अज्ञान रुपी अंधकार को चीर कर परम आनन्ददायी दिव्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के श्रीमुख से अवतरित यह वाणी श्री कुलजम स्वरुप महाग्रन्थ में समाहित है, जो वर्तमान संसार को मिली हुई अनमोल आध्यात्मिक संपदा है। इसमें संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान को तारतम के मोतियों की माला के रुप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विशेष रुप से उन अनादि आध्यात्मिक प्रश्नों का जैसे कि - मैं कौन हूं ? कहां से आया हूं ? मेरा प्रियतम कौन है ? आदि का निराकरण है। श्री जी फरमाते हैं कि मनुष्य मात्र प्रियतम परमात्मा की आत्म-प्रिया है, उनकी आत्म-अंगना है। इस भाव को दृढ कर लेने से आत्मा परामात्मा के चरमक्षक का सुख ले सकती है।

तारतम ज्ञान का इस ब्रह्मांड में अवतरण सन् १६२१ ई. में हुआ, जब परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी दिव्य शक्तियों से आवेशित स्वरुप से श्री निजानन्द स्वामी धनी श्री देवचन्द्रजी (१५८१-१६५४) को दर्शन दिये। वही बीजरुप ज्ञान आगे चलकर श्री कुलजम स्वरुप रुपी वटवृक्ष बन गया, जो आज संसार को सुख शीतलता प्रदान कर रहा है। श्री कुलजम स्वरुप निहित ब्रह्मज्ञान का अवतरण १६५९ ई. (नौतनपुरी, जामनगर) से १६९२ ई. (पन्ना, म.प्र.) तक ३३ वर्ष के अंतराल आत्म-जागृति यात्रा दरम्यान अलग-अलग जगह पर हुआ। इसमें कुल १८,७५८ चौपाईयां है, जो १७

रत्नरुप ग्रंथो में प्रस्तृत है । निज- आनन्द(शाश्वत सुख) के पथ पर अग्रसर आत्मखोजी के लिए तो यह सच्चिदानन्द परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञानमयी स्वरुप ही है।

इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है । मिहिरराज ठाकुर(१६१८-१६९४ ई.) जिनका लौकिक नाम है, वे प्रियतम परब्रह्म की मेहर से महामति पद की शोभा प्राप्त करते हैं और इनके तन से परब्रह्म अक्षरातीत की लीला होने से उनकी पहचान करने वाला 'सुन्दरसाथ' समुदाय उन्हें प्राणनाथ के स्वरुप में प्रणाम करता है । जो यथार्थ में क्षर पुरुष एवं अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म प्राणनाथ है।

जामनगर राज्य (गुजरात) में दीवान पद पर आसीन मिहिरराज ने अपने सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्र जी (१५८१-१६५४ ई.) की प्रेरणा से भौतिक सुखों को त्याग कर आत्म जागृति अभियान का महा संकल्प लिया । बारह साल की आयु में वे अपने सद्गुरु के चरणों में आये और तारतम ज्ञान प्राप्त किया। अद्वैत प्रेम के स्वरुप की पहचान करके स्वयं सेवा, समर्पण और प्रेम की मूर्ति बन गये । आध्यात्मिकता को अपने जीवन के केन्द्र में रख कर ही उन्होंने अपना कुटुम्ब धर्म, समाज धर्म, देश धर्म और मानव धर्म निभाया। उन्होंने मानवतावादी दृष्टि से प्रत्येक मानव में निहित आत्म-चेतना को परमात्मा चेतना से जोडा । व्यक्ति, समाज, धर्म और विश्व मंच को एक आध्यात्मिक कडी से जोडा । अत: उनके समन्वयात्मक प्रयासों का और उनकी वाणी का सम्यक मूल्यांकन संकीर्ण सांप्रदायिक परिधि से बाहर हो कर ही संभव है।

इसके साथ साथ सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक प्रश्नों को भी उन्होंने सुलझाया । वे परिवर्तनकारी सामाजिक क्रान्ति में निमित्त रुप बने । धर्म के नाम पर फैले अंध-विश्वास, अस्पृश्यता, छुआ-छूत, जाति-पाति और उंच-नीच के भेदभाव, अहिंसा, विविध प्रकार के व्यसनों में लिप्तता, स्त्री-वर्ग को होने वाले अन्याय, धार्मिक असहिष्णुता, दिखावे मात्र का धर्म पालन, कर्मकांडोंकी

जडता, धार्मिक क्षेत्र में बाह्य आडंबर द्वारा शोषण आदि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आज से ४०० वर्ष पूर्व की रुढिग्रस्त मिथ्या मर्यादाओं में जकडे हुए समाज को नवचेतना प्रदान की, जिसकी आज से सामाजिक जीवन में और भी आवश्यकता है।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा आंदोलन और चरखे से क्रांति की प्रेरणा श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से अपने बचपन में अपनी माता जी पुतलीबाई के माध्यम से प्राप्त की। ऐसे विश्व के महान मानवतावादी अनेक विचारकों पर श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

इस पुष्प में प्रस्तुत दिव्य वाणी की चौपाईयां आपको श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान की महिमा प्रकाशित कर रही है।

साथियों ! इस तारतम वाणी के बल से ही १६७८ ई. (संवत १७३५) में हरिद्वार में महाकूंभ के पर्व पर महामति जी विजयाभिनन्द निष्कलंक बुध्द के रुप में जाहिर हुए। इतना ही नहीं, मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में सर्वधर्म समभाव का संदेश लेकर अपने बारह सुन्दरसाथ को भी भेजा । मुगल सम्राट को धर्म का सच्चा स्वरुप बताया और अनेक हिन्दू राजाओं को भी ज्ञान से जाग्रत किया। आखिर उन्हें मिले वीर बुन्देला छत्रसाल (१६४८-१८३१ ई.), जिन्होंने उनके संरक्षण में बुंदेलखंड में आदर्श आध्यात्मिक राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी पन्ना शहर (एम.पी.) को वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बनाया।

साथियों ! ज्ञान और प्रेम तो बांटने से ही बढता है । अत: आज विश्व भर में करोडों लोग इस ब्रह्मज्ञान के मार्गदर्शन में स्वयं आत्मजागृति प्राप्त करके संसार को लाभान्वित करने की सेवा कर रहे हैं । श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान से प्रेरित साथी इस सद्भावना से आप तक श्री प्राणनाथ वाणी के इस पुष्प को लेकर पहुंचे है।

आपका जीवन इस पुष्प की दिव्य खुशबू से भर जाये और आप स्वयं भी इस महक को फैलाने में जुट जायें, हम यही हार्दिक मंगल कामना करते हैं । आपके आत्मस्वरुप में कोटि-कोटिसप्रेम प्रणाम।

जीवन - एक अनमोल अवसर

यह सच है कि संसार को हम जिस नजर से देखते हैं, वह हमें वैसा ही दिखाई देता है। कहा भी जाता है, "जैसी द्रष्टि वैसी सृष्टि"। लेकिन अज्ञानता और मोह से भरी नजर से न तो संसार की वास्तविकता को जाना जा सकता है, और न ही हमें प्राप्त मानव रुप का अधिकतम लाभ ही मिल पाता है। ज्ञान के चक्षु खुलने पर ही हमें अपने पंच भौतिक शरीर और सांसारिक जगत के अनित्य स्वरुप का बोध होता है। अपने दिव्य स्वरुप और धाम का ज़ान और सुख भी हमें इसी जीवन में मिल सकता है। इसी में मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

साथियों ! यह संसार परिवर्तनशील, समय से बंधा हुआ (टाईम-बाउन्ड) तथा क्षरित होने वाला है। इसलिए, धर्मशास्त्रों में इसे अनित्य, मिथ्या या झूठा भी कहा गया है। इस में सुख और दुःख का चक्र निरंतर चलता रहता है। हर मनुष्य अपने जीवन में इसका प्रत्यक्ष अनुभव भी करता है। फिर भी अज्ञानता और मोह की स्थिति में उसको भौतिक सुख ही सच्चा और अंतिम लगता है।

संसारी खेल के नशे में मनुष्य इतना भ्रमित हो जाता है कि वह शाश्वत सुख पर ध्यान ही नहीं देता। जीवन के अंतिम समय तक वह सुख के मूल स्त्रोत और उसको प्राप्त करने के उपायों के विषय में अज्ञात

रह जाता है। मोह से वशीभूत होकर वह इस छल भरे संसार को ही शाश्वत सत्य, नित्य चेतन एवं आनंद प्रदान करने वाला मान लेता है। उसे यह खयाल भी नहीं आता कि वास्तव में हम कौन है, संसार की वास्तविकता क्या है, और संसार में आने का कारण क्या है।

साथियों ! वर्तमान समय २८ वें कलियुग का अंतिम चरण है। इसमें जी रहे हम सब लोग बडे भाग्यवान हैं। क्योंकि प्रियतम परमात्मा की कृपा से अब ऐसे ब्रह्मज्ञान का उदय हो चुका है, जिसकी राह युगों युगों से ऋषि, मुनि, त्रिदेवा आदि देख रहे हैं। इस ज्ञान से प्रत्येक मनुष्य लाभान्वित होना है।

श्री प्राणनाथ जी इस वर्तमान समय को 'जागनी' अर्थात् सामूहिक आत्मजागृति का समय कहते हैं। 'जाग कर' दुनिया का खेल देखने को कह रहै हैं, यानि कि यह जागनी का ब्रह्मांड है। ब्रह्मज्ञान को सिर्फ कहने और सुनने - सुनाने तक सीमित न रख कर श्रेष्ठ आचरण यानि कि रहनी में लाना है। इस ब्रह्मज्ञान की सहायता से अखंड परमधाम और अपने दिव्य पर-आत्म स्वरुप की पहचान हो जाती है और हम आत्मीय स्तर की रहनी युक्त जीवन जीना शुरु कर सकते हैं। प्रियतम परमात्मा का ध्यान एवं अनन्य भाव से प्रेमपूर्ण सेवा में समर्पित होने का यही एक अवसर है। क्या आप परम सत्य की खोज करके हमें मिले अनमोल अवसर का महतम लाभ लेना चाहेंगे ?

श्री प्राणनाथजी तो वचन देते हैं कि आप इसी जन्म में निज स्वरुप के प्रति जागृत हो कर संसार व परमधाम दोनों ही स्थानों का सुख ले सकते हैं। बार-बार आवागमन के चक्कर काटते रहने की अब आवश्यकता नही रह गयी है।

नित्य सुख या निज-आनन्द की प्राप्ति ही सभी प्रकार के भय से मुक्ति दिला सकती है। निर्मल हृदय से जब दिव्य प्रेम प्रकट होने लगता है, तब नित्य सुख या निज-आनन्द की स्थिति बनती है। ऐसे में मिटने वाले शरीर और संसार के हर प्रकार के भय समाप्त हो जाते हैं। श्री प्राणनाथजी की श्री मुखवाणी तारतम ज्ञान के आचरण ही से हृदय निर्मल होता है और जैसे-जैसे माया का आवरण हटने लगता है, हृदय से दिव्य प्रेम की धारा प्रवाहित होने लगती है। ऐसी स्थिति में पिंड और ब्रह्मांड में भी पुरुषोत्तम परमात्मा का प्रेम ही प्रेम दिखाई देने लगता है।

साथियों ! संसार में रहते हुए भी प्रियतम हमें आत्मसृष्टि से अपने चरणकमल में बैठे होने का अनुभव कराना चाहते हैं। क्या आप अपने ज्ञानचक्षु खोल कर अपने जीवन को एक और आत्मिक सुख की दिशा में आगे बढाना चाहेंगे ? संसार रुपी जल में रह कर कोरे रहने की अर्थात उससे अलिप्त रहने की कला सीखना चाहेंगे ? यदि हां, तो आईये, हम आप को उस दिव्य यात्रा पर ले चलते हैं, जिसका पथ श्री प्राणनाथजी की मंगलमयी ब्रह्मवाणी से आलोकित है।

इस दिव्य प्रकाश में हम अपने पंच-भौतिक शरीर और संसार की वास्तविक स्थिति को जान लें और इसी जीवन में अखंड सुख और आनंद का अपना मार्ग प्रशस्त करें।

मानव तन - अनमोल अवसर

मानखे देह अखण्ड फल पाईए,
सो क्यों पाएके वृथा गमाईए।
ए तो अधखिन को अवसर,
सो गमावत मांझ नींदर॥ **कि रंतन ३/२**

साथियों ! यह निश्चित जान लें कि यह मानव तन क्षणिक है फिर भी एक ऐसा अनमोल अवसर है, जिसमें तुम्हें प्रियतम परमात्मा का साक्षात्कार हो सकता है। इसे व्यर्थ में मत गंवाइये। नित्य आनंद का सुख छोड कर तुम अपना जीवन अनित्य झूठे सुखों में क्यों गवां रहे हो ? यह जीवन रुपी अवसर तो तुम्हें आधे क्षण के लिये ही मिला है। पानी के बुलबुले के समान तुम्हारा यह शरीर कब छूट जाएगा यह भी पता नहीं है। फिर भी तुम अज्ञान और भ्रम में भटकते हुए अपने अनमोल जीवन को गंवा रहे हो।

खोटा साटे साचूं जडे छे,
एवी मली छे बाजार।
लाभ अलेखे आ फे रातणो,
जो राखी सको वहेवार॥ **कि रंतन १२४/२१**

सत्य के चाहकों! अब की बार हमें संसार रुपी अदभूत बजार मिला है, जिसमें जगत के क्षणिक सुख

और आत्मा के नित्य सुख दोनों ही खरीदे जा सकते हैं। यदि अपने आध्यात्मिक चिंतन को ठीक रख सकते हो तो तुम्हें इसी मानव तन में अवर्णनीय आनन्द मिलेगा।

सुनियो दुनियां आखिरी,
भाग बडे हैं तुम।
जो कबूं कानों ना सुनी,
सो करो दीदार खसम॥ सनंध ३३/१

आखिरी युग में आने वाले दुनिया के लोगों ! तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुम्हें परमात्मा का तारतम ज्ञान सुनने का मंगल अवसर मिल रहा है। अत: तुम अपने आत्मस्वरुप की और सत-चित-आनन्द प्रियतम के दिव्य स्वरुप, धाम और परमानन्द लीला की पहचान करके अपने ज्ञानचक्षु से उनका दर्शन करो।

संसार की वास्तविक्ता

लेकिन इस अनमोल अवसर का उचित लाभ लेना है तो सर्वप्रथम संसार और शरीर की वास्तविकता को जानना होगा। तो आईए -

तूं कहा देखे इन खेल में,
ए तो पड्यो सब प्रतिबिम्ब।
प्रपंच पांचो तत्व मिल,
खेलत सूरत के संग॥ किरंतन ७/२

सत्य के खोजी साथियों ! तुम तो प्रियतम परमात्मा की आनंदस्वरुपा 'आत्मा' हो। तुम सिर्फ इस संसारी खेल के द्रष्टा हो। कर्मों के अनुसार जीव

ने इस मायावी जगत में पंचभौतिक शरीर धारण किया है। इस समय तुम उसी जीवचेतना के साथ जुड कर इस संसारी खेल को देखने के साथ-साथ खेल भी रहे हो। इसे देखकर तुम इतने भ्रमित क्यों हो रहे हो ? यह संसार और शरीर पांच तत्वों से रचा हुआ प्रपंच ही है, जो अखंड अस्तित्व की छाया मात्र है। अपनी तारतम वाणी की सर्वप्रथम चौपाई में श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं......

हवे पेहेलां मोहजल नी कहूं वात,
ते तां दु:ख रुपी दिन रात।
दावानल बले कई भांत,
तेणी के टली कहूं विख्यात॥ रास १/१

सर्वप्रथम, हम आपको संसार के उस सत्य का बोध कराते हैं, जो कि अज्ञानता और मोह माया के अंधकार से भरा हुआ है। यह संसार उपर से तो चमक-दमक से परिपूर्ण और सच्चा सुख प्रदान करने वाला लगता है, लेकिन सत्य तो यह है कि मायावी जगत में प्रत्येक मनुष्य को मोहवश दु:ख ही दु:ख प्राप्त होता है।

जीव को शरीर की वास्तविकता का ज्ञान होना जरुरी है :-

ज्ञान के अभाव में अधिकांशत: अंत:करण में राग, द्वेष और लोभ इत्यादि विकारों का कभी न बुझने वाला दावानल स्वत: ही प्रज्वलित होता रहता है। मानव इन विकारों की अंधजाल में इतना जकडा हुआ

है कि उसका यथार्थ वर्णन असंभव है । अज्ञान वश मानव दु:ख को ही सच्चा सुख मान बैठा है ।

जिस प्रकार मरीचिका का जल भ्रम मात्र होता है, उसी प्रकार सांसारिक आसक्ति से नित्य सुख की कामना करना भी भ्रम मात्र और व्यर्थ है । क्योंकि शरीर के छूटने के साथ ही तुम्हारे मिथ्या सुख के भ्रम और मायावी सपनों का भी अंत हो जाता है ।

रे जीव शरीर रची सेजडी,
इत आवे नींद अपार।
ए सूते ही पटकावहीं,
पुकार न पीछे बहार।। **किरंतन ३३/१२**

हे जीव ! इस बात को तुम ध्यानपूर्वक समझ लो कि तुम्हारा यह जो शरीर है, वह एक सुखदायक शैया की तरह है । उसे इस प्रकार रचा गया है कि वह तुम्हें अज्ञानता की इतनी गहरी निद्रा में सुला देता है कि तुम आवागमन के चक्र में फंसे रहते हो। तुम न तो इस निद्रा से बाहर निकल पाते हो और न ही तुम्हारा विवेक कार्य करता है कि तुम कुछ बोल सको।

अब तुम इस शरीर की आसक्ति से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास करो। यह आसक्ति अमावस्या की उस भयानक अंधेरी रात की तरह है कि जिसमें प्रकाश का नामोनिशान नहीं दिखाई देता। इसमें रस, रुप आदि विषयों का जाल पहले तो बहुत ही सुख रुपी प्रतीत होता है, किंतु बाद में बहुत ज्यादा दु:ख रुपी अग्नि की ज्वाला में जलाता है।

मिथ्या अभिमान क्यों करे ?

आपको पृथ्वीपति कहावें,
ऐसे केते गये बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए,
काल ना छोडत ताए।। **किरंतन ४८/३**

साथियों ! तुम एक बात स्पष्ट रुप से समज लो । अपने को संपूर्ण पृथ्वी का अधिपति कहलाने वाले कितने ही चक्रवर्ती सम्राट अपना प्रभुत्व दिखा कर इस धरती पर आये और यहां से चले भी गये । तुम इस भ्रम में न रहो कि तुम्हारा कभी अंत नहीं होगा । अरे, जब स्वर्ग में, जहां पर लोग स्वयं को अमर मानते हैं, उनके स्वामी देवेश इन्द्र को भी यह काल अपने पाश में जकड लेता है, तो तुम्हारे जैसे सामान्य मनुष्य जीव का अस्तित्व ही क्या है ? जब सब का अंत सुनिश्चित ही है, फिर मिथ्या अभिमान क्यों ?

शरीर से इतना मोह क्यों ?

ए अनमिलती सों न मिलिए,
जाको सांचो नाही संग।
नाहीं भरोसो खिन को,
ज्यों रैनी को पतंग।। **किरंतन ३३/९**

जो शरीर मिलने के बाद, एक समय हमारा साथ छोड ही देता है, उससे कैसा मोह ? साथियों उससे आसक्ति व्यर्थ है। शरीर से तुम्हारी जो मित्रता है, वह सत्य नहीं है। उस शरीर का कोई भरोसा नहीं की

वह कब साथ छोड दे। इसकी तो वैसी ही दशा होती है, जैसे कि रात्रि में जलते हुए दीपक की लौ से प्रेम करने वाले कितने ही पतंगो की होती है। इसलिये, इस शरीर के प्रति मोह को त्याग दो।

कांटे चूभे दुःख पाईए,
सेहे ना सके लगार।
पर होत है मोहे अचंभा,
क्यों सेहेसी जम मार।। **किरंतन ३३/१५**

अरे जीव ! तुम्हारे शरीर में जब एक छोटा-सा कांटा भी चुभ जाता है, तो तुम्हें इतनी पीडा होती है कि कुछक हो ही मत। तुम लेशमात्र भी उस पीडा को सहन नहीं कर पाते। लेकिन मुझे यह आश्चर्य होता है कि जो एक कांटे की पीडा को नहीं सहन कर पाता है, वह ८४ लाख योनियों में भ्रमण करते समय बार-बार मिलने वाली इस जन्म-मरण की घनघोर पीडा को कैसे सह पायेगा ? इसलिए, इस जन्म-मरण के चक्र से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास करो। आखिर क्या करोगे उस सुख का, जिसका न आज कोई ठिकाना है और न कल रहेगा ? अंत में उस सुख से निराशा ही हाथ लगनी है।

संसार की रीत जान लो।

यामें बडे जीव मोहजल के,
मगरमच्छ विक्राल।
बडा छोटे को निगलत,
एक दूजे को काल।। **किरंतन ७४/३**

जैसे समुद्र में बड़े और शक्तिशाली जीव छोटे कमजोर जीवों को खाकर अपनी भूख मिटाते है, उसी प्रकार इस संसार में धन, पद, प्रतिष्ठा आदि सांसारिक शक्तियों - सपंन्न मानव ईर्ष्या-द्वेष व अहंकार के वशीभूत होकर अपने से कमजोर मनुष्यों को दुःख देता रहता है।

अपने मिथ्या "मैं पने" से उपर उठ जाओ

सत्य के चाहक साथियों ! आओ, प्रियतम प्राणनाथ हमें संसार की ओर से मोड कर स्वयं के प्रति जाग्रत होने की अत्यन्त महत्वपूर्ण युक्ति बता रहे हैं। वे फरमाते हैं कि अपने "मैं-पने" की मौत से ही शरीर तथा संसार का लय होगा।

ए बानी मैं मारेय की,
सुनी होए मोमिन।
दुनी तरफ की जीवती,
क बहूं न रहेवे इन।। **खिलवत ५/३१**

यह ब्रह्मवाणी "मिथ्या मैं" या अहम भाव को मिटाने वाली है। जिन ब्रह्मात्माओं ने यह वाणी सुनी होगी और उस पर अमल किया होगा, उनका सांसारिक मोह एवं अहम भाव नहीं रहेगा।

तारतम वाणी-अमृत का रस है।

साथियों सच तो यह है कि हम अपने दिव्य धाम से सूरता(ध्यान) द्वारा इस संसारी खेल में आये है। यहां आकर हमारी आत्म-विस्मृति हो गयी है। अब हम ब्रह्मज्ञान से सूरता को जाग्रत कर संसार व परमधाम दोनों ही का सुख इसी जन्म में ले सकते हैं। आईए, इसकी युक्ति जान लें।

एही रस तारतम का,
चढ्या जेहेर उतारे।
निर्विख्र काया करे,
जीव जागे का रारे।। **प्रकाश(हिं.)३१/१४२**

तारतमवाणी रुपी अमृत का रस जिसको भी पिला दिया जाये, अर्थात इस वाणी के द्वारा जिसको जागृत किया जाये, वह इस मायावी जगत के आकर्षणों के प्रभाव से मुक्त हो जाता है, यदि माया का विष चढा हो तो वह भी उतर जाता है। जीवात्मा परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में दृढ निश्चयी होकर आगे बढता है। प्रियतम धनी वचन देते हैं कि -

संसार सब के अंग में,
मेरी बुध को क रुं प्रवेश।
असत होसी सत,
मेरे नूर के आवेश।। **किरंतन२३/८७**

संसार के समस्त जीवों को मैं अपना विशिष्ट तारतम ज्ञान दूंगा। सब को मेरी जाग्रत बुध्धि प्राप्त होगी। इस से सबको अपने निज-आत्म स्वरुप का

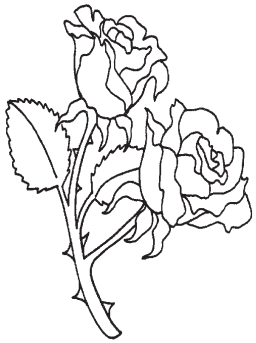

बोध हो जायेगा। मेरे दिव्य तारतमज्ञान से सबके दिलों में अदभूत प्रेरणा शक्ति अर्थात मेरा आवेश भर जायेगा। दिव्यता के सागर में सराबोर होकर प्रत्येक जीव और यह असत्य ब्रह्मांड भी अखंड हो जायगा।

प्रेमी साथियों ! अब बिना एक पल गवांए, तारतम ज्ञान को अपने हृदय में बसा लो। क्योंकि यह अवसर फिरसे नहीं मिलना है।

निजघर पिउको लीजे प्रकास,
ज्यों वृथा न जाय एक स्वांस।
ग्रह गुन इंद्री भर तूं पांओ,
ऐसा फेरन पाईए दाओ।। **प्रकाश(हि.) २१/१७**

अपने मूलघर परमधाम, प्रियतम धनी के दिव्य स्वरुप और शोभा व आनन्दमयी लीला के प्रकाश को अपने हृदय रुपी घर-मन्दिर में इस प्रकार बसा लो, कि एक भी स्वांस व्यर्थ न जाये। अपने गुण, अंग, इन्द्रियों की सेना को अपने अधीन करके जाग्रत रहकर आगे कदम रखो।

आचरण की ही महिमा है

के हेनी सुननी गई रात में,
आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी के हेनी का छुए नहीं,
होए जाहेर बका अर्स तन।। **छोटा क.ना. १/५६**

साथियों ! अब तो आचरण का दिन आ गया है। सिर्फ कहने, सुनने और सुनाने की रात्रि समाप्त हो चूकी है। यदि आत्म बल का अनुभव करना चाहते हो

तो इसी वक्त प्रियतम के वचनों पर अमल करना प्रारंभ करें।

कौल फैल आए हाल आइया,
तब मौत आई तोहे।
तब रुह की नासिका को,
आवेगी खुश्बोए ।। **सिनगार २५/६७**

यदि तुम्हारी कथनी और करनी में एकरुपता आ जाती है, यदि तुम्हारी जीवन रहनी सत्य, प्रेम और एकात्मताभाव से परिपूर्ण हो जाती है, तो इस अवस्था में तुम्हारे अन्दर शरीर और संसार का कोई अहम भाव नहीं रहेगा। और तुम संसार की ओर से मरे हुए के समान हो जाओगे। फिर तुम्हें तुम्हारे असल घर परमधाम की सुगंधी आनी शुरु हो जायेगी।

लेकिन साथियों ! आत्म-पहचान में ही जीवन के सच्चे सुख का मूल आधार है। इसलिए, सर्वप्रथम इतना तो अवश्य ही कर लें।

पहेले आप पहेचानो रे साधो,
पहेले आप पहचानो।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को,
कौनक हे मैं जानो ।। **किरंतन १/१**

पहले अपने आप को पहचानो कि मैं कौन हूं ? मेरा निज स्वरुप क्या है ? इसे जाने बिना कौन कह सकता है कि मैंने परब्रह्म परमात्मा को जान लिया है ? पहचान के बाद प्रियतम प्राणनाथ से अपना दिव्य सम्बन्ध धारण कर लोगे तो उनसे तुम्हारा वार्तालाप शुरु हो सकता है। इसलिए -

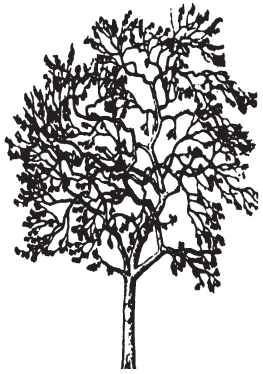

देख तूं निसबत अपनी,
मेरी रुह तूं आखां खोल।
तैं तेरे कानों सुनें,
हक बका के बोल ।। **खिलवत ९/१**

अब तो अपनी आत्मिक आंखे खोलो। प्रियतम परब्रह्म से अपने मूल संबंध की पहचान कर लो। इस मायावी खेल में आते समय तुमने अपने प्रियतम परमात्मा से जो वादे किये हैं, इन्हें याद करते रहो। अपनी मूल निसबत को निभा लो। तारतम वाणी को जीवन में आत्मसात करते रहो। निश्चित ही आनंद तुम्हारे साथ हैं।

इश्क आगूं न आवे माया,
इश्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया।
इश्कें अर्स वतन बताया,
इश्कें सुख्ख पेड़ का पाया ।। **परिक्रमा १/२६**

साथियों ! प्रियतम प्राणनाथ के दिव्य प्रेम की उपस्थिति में माया का आवरण टिक ही कैसे सकता है ? दिव्य प्रेम तो इस पिंड (शरीर) और ब्रह्मांड (संसार) दोनों का अस्तित्व मिटा देने वाला है। उनका प्रेम हृदय में बसने पर ही अखंड परमधाम की पहचान और मूल सुख प्राप्त होता है।

साथियों ! यही तो है "ब्रह्मानन्द" स्वरुप सत्गुरु की महिमा, जो आत्म स्वरुप की पहचान कराते है। ऐसे सत्गुरु की कृपा से ही हमें मिले आत्म जाग्रति के अवसर की पहचान हो पाती है। अपने

आनन्द के मूल स्त्रोत अक्षरातीत सच्चिदानंद से मिलने और समस्त सृष्टि को अखंड मुक्ति भी इसी सत्गुरु स्वरुप ब्रह्मज्ञान के माध्यम से मिलनी है। उन्हीं के कृपासे वैश्विक चेतना जागृति के सभी निशान ज्ञात हो रहे है। तो फिरहम ऐसे अनमोल सुअवसर कोकैसेगंवा सकतेहैं ?

सत्गुरु सोई जो आप चिन्हावे,
माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की,
ज्यों भूलिए नहीं अवसर।। **किरंतन१४/११**

आईये ! अब संसार और परमधाम काश्रेष्ठ लाभ लेने के लिये प्रियतम प्राणनाथ से मैत्री करने के लिये कुछसरल नियम कोजीवन में अपना लें।

महामत कहेईमान इश्क की,
सुक्र गरीबी सबर।
इन बिध रुहें दोस्ती धनी की,
प्यार करसके त्यों कर।। **किरंतन१०२/१२**

प्रियतम प्राणनाथ की दिव्य शक्तियों से विभूषित श्री महामति जी कहतेहै कि प्रियतम धनी काप्रेम पाने के लिये सत्य के चाहक साथियों

को ब्रह्मज्ञान पर अटूट विश्वास और अपने जीवन में अनन्य प्रेम भाव, कृतज्ञता, विनम्रता, धैर्य और संतोष धारण करना चाहिये। इन सभी गुणों को अपने हृदय में धारण करने से ही प्रियतम के सान्निध्य कासुख प्राप्त होगा।

।। सप्रेम प्रणाम ।।